झारखंड के प्रमुख वाद्य–यंत्र

झारखंड वासियो की जीवन–शैली मे संगीत और नृत्य की प्रधानता है । यहाँ के दैनिक जीवन मे प्रायः हर प्रकार के समारोह अथवा अनुष्ठान मे संगीत नृत्य अनिवार्य है ।

जन्म , नामकरण, शादी–विवाह , पर्व त्योहार कृषि एवं विभिन्न धार्मिक अवसरों के आयोजन संगीत के बिना संपन्न नही होते है ।

किसी भी संगीत मे वाद्य–यंत्र का स्थान महत्वपूर्ण होता है ।

इसी प्रकार वाद्य यंत्र के बिना झारखंडी संगीत का आनंद अधूरा है ।

झारखंड वाद्य–यंत्रो को उनकी बनावट के अनुसार तीन श्रेणियो मे विभक्त किया जा सकता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

वाद्य–यंत्रो का वर्गीकरण

1. तंतु वाद्य → तारो मे कंपन द्वारा बजाए जाने वाले
2. सुषिर वाद्य → फूंककर बजाए जाने वाले वाद्य
3. ताल वाद्य → ठोककर बजाए जाने वाले वाद्य
   - अवनद्ध → लकड़ी के ढ़ांचे पर चमड़ा मढ़कर निर्मित वाद्य
   - धनवाद्य → कांसा से निर्मित वाद्य

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

1. तंतु वाद्य :– वैसे वाद्य जिनमे तांत या तारों मे कंपन के माध्यम से संगीतमय ध्वनि उत्पन्न की जाती है । उदाहरण – एकतारा (गुपि जंत्र) , भुआंग , केंदरा/केंदरी , बनम , टोहिला , सारंगी आदि ।

क) एकतारा :– यह एक तंत्री वाद्य है । इसमें एकतार होने के कारण इसे 'एकतारा' कहा जाता है ।

- इसे लौकी के आधे कटे खोल के ऊपर चमड़ा मढ़कर बनाया जाता है।
- इसके तार को अंगुली या धातु के टुकड़े से छेड़कर ध्वनि निकाली जाती है ।
- सामान्यतः इसका प्रयोग भक्ति संगीत मे साधु–संतो द्वारा किया जाता है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

ख) केंदरा/केंदरी :–

- यह संथलो का प्रिय वाद्य है ।
- इसे 'झारखंडी वायलिन ' कहा जाता है ।
- इसका निचला हिस्सा कछुएं की खाल या नारियल के खोल का बना होता है । इसमे तीन तार होते है ।

ग) भुआंग :–

- यह संथालो का प्रमुख वाद्य यंत्र है ।
- इसका प्रयोग नृत्य तथा संगीत मे किया जाता है ।
- इसमे तार को ऊपर खींचकर छोड़ने से धनुष टंकार जैसी आवाज निकलती है ।
- संथाली इसे दशहरा के समय दासांई नाच मे बजाते है ।
- भुआंग तथा केंदरा संथालों का प्रमुख वाध है ।

घ) टोहिला

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- इसे बनाने हेतु सूखी लोकी तथा खोखली का प्रयोग किया जाता है
- इससे अत्यंत कोमल ध्वनि निकलती है । जिसके कारण इसे गीत के साथ संगत के रूप मे बजाया जाता है ।

- इसका वादन अत्यंत कठिन होने के कारण धीरे–धीरे इसका प्रयोग कम हो रहा है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

ड.) बनम

- इसका प्रयोग संथाल जनजाति द्वारा गीत के साथ संगत के रूप मे किया जाता है ।
- इसका निर्माण को काटकर उस पर गोह का चमड़ा लगाकर किया जाता है ।
- यह वायलिन के समान होता है , जिसके तार मे कमानी से रगड़ने पर मोटी ध्वनि निकलती है ।

2. सुषिर वाद्य

CAREER FOUNDATION

सुषिर वाद्य :– ऐसे वाद्य जिसे फूंककर बजाया जाता है उसे सुषिर वाद्य है । जैसे – बांसुरी , शहनाई , सिंगा , मूरली , मदनभेरी आदि ।

क) बांसुरी :–

- यह झारखंड मे सुषिर वाद्यों मे सबसे अधिक लोकप्रिय है ।
- इसका निर्माण बांस से किया जाता है तथा डोंगी नामक बांस से बहुत अच्छी बांसुरी बजाई जाती है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

ख) सानाई (शहनाई) :–

- यह झारखंड का एक लोकप्रिय वाद्य है ।
- इसका प्रयोग छऊ , पईका तथा नटुआ नृत्य मे ं प्रमुखता से किया जाता है ।
- झारखंड के जनजातीय समुदाय मे शादी–बिहार , पर्व–त्योहार आदि अवसरों पर शहनाई का वादन किया जाता है ।
- यह झारखंड के जनजातीय समुदाय का मंगल वाद्य है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

ग) सिंधा / सिंघा

- सिंगा (प्रायः भैंस या बैल) से बनाये जाने के कारण इसे 'सिंगा' कहा जाता है ।
- सींग के नुकीले सिरे पर एक छिद्र करके वहां मुंह से फूंक मारकर इसे बजाया जाता है ।
- इसका प्रयोग छऊनृत्य के समय तथा पशुओं के शिकार के समय किया जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

घ) मदनभेरी

- यह एक सुषिर वाद्य है ।
- इसमें लकड़ी की सीधी नली होती है जिसके आगे पीतल का मुंह रहता है ।
- लगभग 4 फीट लंबे इसे वाद्य मे कोई छेद नही होता इसलिए फूंक मारने पर इससे एक ही स्वर निकलता है ।
- यह एक सहायक वाद्य है और इसे ढोल , बांसुरी , सानाई , के साथ बजाया जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

3. ताल वाद्य

ताल :– ऐसे वाद्य जिन्हे पीटकर बजाया जाता है , ताल वाद्य कहलाते है । ये दो प्रकार के होते है ।

क) अनवद्ध वाद्य :– ये वाद्य लकड़ी के ढ़ांचे पर चमड़ा मढ़कर निर्मित किए जाते है । जैसे –मांदर , ढ़ोल , नगाड़ा , ढ़ाका , धमसा , डमरू , कामरा , ढ़प , खजरी , जुड़ी आदि ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

ख) धन वाद्य :– ये वाद्य कांसा से निर्मित किए जाते है । इसे सहायक ताल वाद्य भी कहा जाता है । जैसा – करताल , झांझ , घंटा , काठ ,खाला आदि ।

क) मांदर

- वाद्य–यंत्रो मे मांदर को सबसे अधिक मधुर वाद्य–यंत्र माना जाता है।
- यह झारखंड का प्राचीन एवं अत्यंत लोकप्रिय वाद्य है ।
- इसे यहां लगभग सभी समुदाय के लोग बजाते है । यह पार्श्वमुखी वाद्य है ।
- इसका निर्माण मिट्टी या लकड़ी के गोलाकार खोल के खुले सिरों के दोनो ओर बकरी का चमड़ा मढ़कर किया जाता है ।
- इसका बांया चौड़ा तथा दाहिना मुंह छोटा होता है ।
- इसके छोटे मुंह वाले खाल पर एक विशेष लेप (किरण) लगाया जाता है । इसे लेप के कारण इसकी आवाज गुंजायमान होती है ।
- इसे रस्सी के सहारे कंधे से लटकाकर बजाया जाता है ।
- इसकी आवाज अत्यंत गुंजदार होती है ।

CAREER FOUNDATION
जनन राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

ख) ढ़ोल

- यह झारखंड का अत्यंत प्रचलित वाद्य है ।
- झारखंड मे कई अवसरों पर ढ़ोल का वादन प्रमुखता से किया जाता है । इसे हाथ या लकड़ी से बजाया जाता है ।
- इसका निर्माण कटहल , आम तथा गम्हार की लकड़ी के खोल से किया जाता है ।
- इसके मुंह को बकरी के खाल से मढ़कर तैयार किया जाता है ।

ग) नगाड़ा

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा

- नगाड़ा भी झारखंड का एक प्रमुख वाद्य है । इसका प्रयोग आदिवासी और सदान दोनो समुदायों द्वारा किया जाता है ।
- यह आकार के आधार पर बड़े , मध्यम तथा छोटे तीनो प्रकारों का होता है ।
- संथाल परगना मे नगाड़ा को टामाक के नाम से जाना जाता है ।
- इसका निर्माण कटहल की पेड़ के गुंबदाकार खोल के सिरों पर भैंस या बकरी का चमड़ा मढ़कर किया जाता है ।
- इसे बजाने के लिए छड़ी का प्रयोग किया जाता है ।

घ) ढ़ाक

- यह आकार मे मांदर एवं ढ़ोल से बड़ा होता है ।
- यह ढ़ोल के समान ही एक प्रमुख वाद्य है ।
- इसका निर्माण गम्हार की लकड़ी के सिरों को बकरी की खाल से मढ़कर किया जाता है ।
- इसका वादन कई पर्व–त्योहारो पर किया जाता है ।
- पइका तथा नटुआ नृत्यों के साथ भी इसका वादन किया जाता है ।
- इसे कंधे पर लटकाकर लकड़ी से बजाया जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

ड.) धमसा

- एक विशालकाय वाद्य है ।
- इसकी आकृति बड़ी कडाही जैसी होती है । इसका ढ़ांचा लोहे की चादर का बना होता है ।
- इसे लकड़ियो के जरिये बजाया जाता है ।
- इसकी आवाज गंभीर और वजनदार होती है ।
- छऊनृत्य मे इस वाद्य की आवाज के जरिये युद्ध एवं सैनिक प्रयोग जैसे दृश्यों का साकार किया जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

B) धन वाद्य :–

क) करताल :–

- यह एक धन वाद्य है । इसमें दो चपटे व गोलाकार प्याले होते है ।
- इन प्यालों के बीच का हिस्सा ऊपर की ओर उभरा रहता है । उभरे हिस्सों के बीच मे एक छेद होता है ।
- छेद मे रस्सी पिरो दी जाती है । रसियों को हाथ की उंगलियों मे फंसाकर दोनो प्यालो मे ताली बजाने की तरह एक–दूसरे पर चोट की जाती है जिससे मधुर ध्वनि निकलती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

ख) झांझ :–

- करताल का बड़ा आकार ही झांझ कहलाता है । आकार मे बड़ा होने के कारण इसकी आवाज मे करताल से ज्यादा गूंज होती है ।

ग) थाला :–

- यह कांसे से निर्मित थाली की तरह होती है ।
- थाला का गोलाकार किनारा दो–तीन इंच उठा होता है । बीच मे छेद होता है ।
- जिससे रस्सी पिरोकर झूलाया जाता है ।
- बायें हाथ से रस्सी थामकर दायें हाथ से इसे मक्के की खलरी से बजाया जाता है ।

घ) काठी

- यह एक धन वाद्य है । इसमें कुड़ ची की लकड़ी के दो टुकड़े होते है।
- इन्हें जब आपस मे टकराया जाता है । तो मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888